रामायण और महाभारत की महत्ता
डॉ. हरवंशलाल ओबराय

अनुवादक : विवेक सहगल

मद्रास के महान् विद्वान् श्री शिवस्वामी महोदय ने लिखा है 'हमारे राज छिन जाएं, ऐश्वर्य धूल में मिल जाय, धन दौलत चोरी हो जाय, हमें हर प्रकार से निराधार बना कर हमारा सब कुछ लूट लिया जाये तब भी जब तक हमारे पास रामायण और महाभारत जैसे अलौकिक रत्न सुरक्षित हैं तब तक हमें कोई डर नहीं। असल में रामायण और महाभारत हमारी संस्कृति के भंडार हैं, इनमें वर्णित भगवान राम और कृष्ण भारत की संस्कृति के प्राण हैं। हिमालय पर्वत की बर्फीली चोटियों से लेकर सोने की लंका तक विशाल इस महान् देश ने एक आत्मा और एक संस्कृति के साथ जोड़ने वाली कोई चीज है तो वह राम और कृष्ण की कथा ही है। अगर हजारों साल की जद्दोजेहद के बाद भी भारत की संस्कृति अमर और अमिट है तो उसका कारण वह जादू है जो रामायण और महाभारत की कहानियां जो हर बच्चे के दिल में बसी हुई है।'

वैदिक काल तो आर्य जाति के जन्म और बचपन का काल है, इस जाति की भरपूर जवानी के दर्शन हमें रामायण और महाभारत काल में ही होते हैं। इस समय देश की ताकत पूरे यौवन पर थी और उस समय वीरता, चरित्र और धर्म की वजह से महान् आदर्श पेश हुए जिनकी अमिट छाप आगे आने वाले युगों तक अंकित हो गई। इतना ही नहीं, इन ग्रंथों का प्रभाव सात समंदर पार तक देखा जाता है।

भिक्षु चमनलाल ने अपनी पुस्तक हिन्दू अमेरीका में बताया है कि कोलंबस के अमेरीका खोजने से लगभग एक हजार वर्ष पहले अमेरीका में हिन्दू राज था और आज भी सैकड़ों मंदिर वहां पाए जाते हैं, जिसमें राम और कृष्ण की मूर्तियां हैं। भारत के दक्षिण और पूर्व की ओर के सारे देशों में रामायण और महाभारत की अमिट छाप है। इंडोनेशिया का अर्थ है—हिन्दू द्वीप समूह। यह किसी समय भारत का अंग माना जाता था और अभी हाल तक वहां के लोगों के धर्म-ग्रंथ रामायण

और महाभारत ही थे—बाली, जावा, सुमात्रा, कंबोडिया वगैरह में विशाल हिन्दू मंदिर अभी भी विद्यमान हैं। मंदिर की दीवारों पर रामायण और महाभारत की कथाओं के चित्र अंकित हैं। वे लोग आज तक रामलीला मनाते हैं। वास्तव में रामायण और महाभारत हमारी संस्कृति के गौरव ग्रंथ हैं, इनको भुलाकर तो हम कंगाल ही हो जायेंगे!

इन महान् ग्रंथों में भारत का जो सुनहरा चित्र खींचा गया है वह दिल को मोहित करने वाला है। इस काल में समाज की रचना वर्ण और आश्रम के आधार पर की गई, चाहे वर्णों का वर्णन वेदों में ही आता हो फिर भी इस काल में वर्ण और आश्रम का बंटवारा बहुत वैज्ञानिक और पक्का कर दिया गया। चारों वर्णों के अलग-अलग कार्य निश्चित कर दिये गए। ब्राह्मण का धर्म यज्ञ करना, स्वाध्याय, शिक्षा और जाति के ज्ञान को बढ़ाना था, क्षत्रिय का धर्म जाति की रक्षा करना एवं वैश्य का धर्म व्यापार द्वारा देश के धन को बढ़ाना था और बाकी वर्णों का खाने-पीने की आवश्यकता को पूरा करना था। शूद्र का धर्म बाकी सारे वर्णों की सेवा करना था। यह बात विचार करने योग्य थी कि शूद्रों के प्रति कोई नीचता का विचार नहीं रखा जाता था। उनके साथ कई बार क्षत्रिय राजा लोग शूद्रों की कन्याओं के साथ विवाह-शादी भी कर लेते थे। राजा के राजतिलक के अवसर पर भी शूद्रों को निमंत्रण दिये जाते और बाकी वर्णों के समान वह भी उत्सवों में भाग लेते थे। भिन्न-भिन्न जातियों में आपस में विवाह हो जाते थे। जब परशुरामजी ने सभी क्षत्रियों का वध कर दिया तो क्षत्रिय स्त्रियों ने ब्राह्मणों से विवाह कर लिये। राजा शांतनु ने मछुआरे की कन्या सत्यवती से और भीमसेन ने हिडिम्बा राक्षसी से विवाह किया।

विवाह-शादी के नियम ज्यादा कठोर नहीं थे। बहु विवाह प्रथा भी चलती थी। राज दशरथ के तीन रानियां थी और पांडु की दो रानियां—कुंती और माद्री। इसके उलट बहुपति प्रथा भी कहीं-कहीं चलती थी। द्रौपदी के पांच पति माने जाते हैं। इन दो प्रथाओं के मुकाबले में राम और सीता के पवित्र प्रेम की कथा एक अनोखी मिसाल है। सीता जैसी सती नारी संसार के इतिहास में कहीं और मिलनी मुश्किल है। वह रावण के अनेक भय दिखाने के बावजूद भी पति व्रत धर्म पर अटल रहीं और इस तरह भगवान् राम भी अश्वमेध यज्ञ के समय सीता की सोने की मूर्ति बना कर रख लेते हैं, लेकिन दूसरा विवाह नहीं करते। भारत में विवाह धर्म का यह सबसे बड़ा आदर्श है। पति और पत्नी दोनों का यह विश्वास होता है कि हमारा एक दूसरे का संबंध सिर्फ एक जन्म का नहीं होता यह जन्म-जन्म का होता है। धरती में समाने से पहले सीता प्रार्थना करती है कि अगर मैं अपने धर्म से कभी पतित नहीं हुई तो मुझे जन्म-जन्म में राम ही पति रूप में मिले।

विवाह आठ प्रकार के माने जाते थे—ब्राह्म-विवाह, देव-विवाह, आर्ष-विवाह, प्राजापत्य-विवाह, गंधर्व-विवाह, असुर-विवाह, राक्षस-विवाह और पैशाच-विवाह। दुष्यंत और शकुंतला का गंधर्व-विवाह हुआ था। दुर्योधन द्वारा कलिंगराज की कन्या को हर कर राक्षस-विवाह किया गया था। सबसे उत्तम ब्राह्म विवाह माना जाता था और सबसे नीचा पैशाच-विवाह।

कहीं-कहीं नियोग का रिवाज था पर बाद में यह रिवाज समाप्त हो गया। सती प्रथा का आरंभ भी हो चुका था। माद्री अपने पति पांडु के साथ सती हो गई थी। परदे का रिवाज भी थोड़ा-बहुत था पर मध्यकाल की तरह कठोर नहीं था। दुर्योधन की रानियां असूर्या पश्या कहलाती थी अर्थात् उनको सूर्य भी न देख पाए। सीता को अग्निपरीक्षा के लिए कहते हुए राम ने कहा, यज्ञ संस्कृति पर संकट के समय स्त्री को सबसे आगे होने में कोई एतराज नहीं होना चाहिए। समाज में स्त्री का आदरपूर्ण स्थान था। वैदिक काल के मुकाबले में स्त्री का स्थान कुछ कम हो गया था। सीता, द्रौपदी, कुंती, सावित्री और विदुला आदर्श नारियां थी। विदुला अपने चार पुत्रों को प्रेरणा देकर बहादुर बना देती है और मदालसा अपनी लोरियों के साथ अपने बच्चों को ब्रह्मज्ञानी बना देती है। राजा नल के जुए में फंस जाने के समय दमयंती राजकाज स्वयं चलाती थी। महाभारत में कहा गया है कि स्त्री ही घर है जिस घर में स्त्री नहीं वह घर, घर नहीं श्मशान है।

स्त्री आनंद में मित्र और उत्सव में पिता तुल्य है और रोग में माता के तुल्य है। समाज में अतिथियों का बड़ा सम्मान होता था। अतिथि को सभी देवताओं का रूप माना जाता था। जिस घर से अतिथि निराश होकर चला जाए वह उस घर वालों का सारा पुण्य हर कर ले जाता है।

खान-पान के सवाल पर शाकाहार को उत्तम समझा जाता था। कुछ लोग मांस-शराब भी उपयोग में लेते थे पर आम जनता इसको अच्छा नहीं मानती थी। ग्रंथों में मांस-शराब की निंदा की गई है।

लोग खेलकूद, रास रंग के भी बड़े शौकीन थे। राजाओं की सभाओं में नाच-गान होते थे। जुआ खेलने की बुरी आदत भी महाभारत काल में आ गई थी। जुए की चौपड़ में ही पाण्डवों का राज-पाट चौपट हो गया था। शतरंज को शतरंज इसलिए कहा जाता था क्योंकि इस खेल में सौ आदमियों का रंजन या मनोरंजन होता था। गेंद के खेल का भी वर्णन मिलता है। भगवान् कृष्ण की गेंद भी यमुना नदी में गिर गई थी। शिकार का शौक भी काफी था पर साथ-साथ अहिंसा का प्रचार भी बढ़ रहा था।

राजा, प्रजा का प्रतिनिधि होता था। संसद की तरह राज सभा में भी समितियां होती थी। राजा उनके साथ सलाह करके ही शासन करता था। वोट डालने के लिए

छोटी-छोटी सलाइयों का प्रयोग किया जाता था। अत्याचारी राजा को प्रजा हटा देती थी। राजा 'वेन' को प्रजा ने सिंहासन से हटा दिया था। प्रजा के द्वारा आंदोलन और हड़ताल करने के उदाहरण भी मिलते हैं। गणराज्य और संघ राज्य भी होते थे। भगवान् कृष्ण स्वयं वृष्णि गणराज्य के नेता थे। गणराज्य में पार्टी सिस्टम भी होता था और राज्य पार्टी के विरोध में विरोधी पार्टी भी होती थी। कैबिनेट की तरह मंत्रिपरिषद् भी होती थी।

राजा शासन के लिये कर भी लगाता था। जिस तरह बादल धरती से पानी लेकर वापस धरती पर ही बरसा देता है उसी तरह राजा भी प्रजा की भलाई के लिए कर लेता था।

नगर बड़े साफ-सुथरे होते थे और उनके बीच बगीचे लगे होते थे। सड़कों पर पानी का छिड़काव भी होता था।

रामराज्य के दौरान कभी अकाल नहीं पड़ा था और सभी प्रेम से सुखी जीवन व्यतीत करते थे।

इस समय के दौरान लोगों का धार्मिक जीवन बहुत उच्च स्तर का था। व्यास, वाल्मीकि, पाराशर, वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे महान् ऋषि इसी समय हुए। जब कोई इसी तरह के ऋषि किसी भी राज सभा में पहुंच जाते तो राजा सारी सभा सहित खड़ा होकर आदर सत्कार करता था।

इसी समय में राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी पूजा शुरू हुई। इसी समय में ही देशभक्ति का बीज-वपन हुआ। राम-लक्ष्मण से कहते हैं, 'यह सोने की लंका मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती, जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।'